# राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के आलोक में चार वर्षीय एकीकृत बी.एड. पाठ्यक्रम की प्रभाविकता का एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

**कमलेश खुराना**
षोधार्थी
शिक्षा संकाय
लॉर्ड्स विश्वविद्यालय,
अलवर
malhotrakamlesh314@gmail.com

**डॉ. सविता गुप्ता**
शोध निर्देशक
शिक्षा संकाय
लॉर्ड्स विश्वविद्यालय, अलवर

## सारांश

*यह शोध पत्र राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP 2020) द्वारा प्रस्तावित चार वर्षीय एकीकृत बैचलर ऑफ एजुकेशन पाठ्यक्रम की प्रभाविकता का एक गहन विश्लेषण प्रस्तुत करता है। भारतीय शिक्षा प्रणाली में शिक्षकों की गुणवत्ता एवं व्यावसायिकता को बढ़ाने के उद्देश्य से यह पाठ्यक्रम एक महत्वपूर्ण सुधार के रूप में देखा जा रहा है। वर्तमान में प्रचलित खंडित शिक्षक शिक्षा मॉडल की सीमाओं को पहचानते हुए, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 एक अंतर्विषयक और समग्र दृष्टिकोण पर आधारित चार वर्षीय एकीकृत कार्यक्रम की वकालत करती है। यह पत्र इस पाठ्यक्रम की रूपरेखा, इसके प्रमुख लाभों जैसे कि विषय–वस्तु ज्ञान और शिक्षाशास्त्र का एकीकरण, प्रारंभिक व्यावसायिक समाजीकरण, प्रतिभाशाली छात्रों को आकर्षित करना, और 21वीं सदी के कौशल के लिए शिक्षकों को तैयार करना, का विस्तृत विवेचन करता है। साथ ही, इसके सफल कार्यान्वयन से जुड़ी चुनौतियों और संभावित समाधानों पर भी प्रकाश डाला गया है। निष्कर्षतः, यह पत्र यह तर्क प्रस्तुत करता है कि यदि उचित रूप से लागू किया जाए, तो चार वर्षीय एकीकृत बी.एड. पाठ्यक्रम भारत में शिक्षक शिक्षा के परिदृश्य को रूपांतरित कर सकता है और देश के भावी शिक्षकों की गुणवत्ता को महत्वपूर्ण रूप से बढ़ा सकता है।*

***मुख्य शब्दः*** *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, चार वर्षीय एकीकृत बी.एड., शिक्षक शिक्षा, व्यावसायिक विकास, अंतर्विषयक दृष्टिकोण, शिक्षाशास्त्र, गुणवत्तापूर्ण शिक्षक।*

## 1. प्रस्तावना

शिक्षा किसी भी राष्ट्र के विकास की आधारशिला होती है, और इस आधारशिला को सुदृढ़ बनाने में शिक्षकों की भूमिका सर्वोपरि है। भारत की राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का लक्ष्य 21वीं सदी की आवश्यकताओं के अनुरूप भारतीय शिक्षा प्रणाली में मौलिक परिवर्तन लाना है। इस विस्तृत नीतिगत दस्तावेज में, शिक्षक शिक्षा को एक विशिष्ट और केंद्रीय स्थान दिया गया है, क्योंकि किसी भी शैक्षिक सुधार की सफलता अंततः शिक्षकों की गुणवत्ता पर निर्भर करती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने भारत में शिक्षक शिक्षा की मौजूदा

स्थिति की गंभीर समीक्षा की है, जिसमें अनेक खंडित और निम्न–गुणवत्ता वाले कार्यक्रमों की पहचान की गई है, जो अक्सर विषय–वस्तु ज्ञान और शिक्षाशास्त्रीय कौशल के बीच गहरा अंतर पैदा करते हैं।

इस समस्या के निवारण हेतु, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने शिक्षक शिक्षा के लिए एक नए और क्रांतिकारी दृष्टिकोण – चार वर्षीय एकीकृत बी.एड. पाठ्यक्रम – का प्रस्ताव किया है। यह पाठ्यक्रम, जो उच्च माध्यमिक विद्यालय से सीधे प्रवेश के लिए डिजाइन किया गया है, स्नातक की डिग्री (जैसे बी.ए., बी.एससी., बी.कॉम) को शिक्षाशास्त्र के गहन अध्ययन के साथ एकीकृत करता है। यह मौजूदा 32 वर्षीय मॉडल (स्नातक के बाद दो वर्षीय बी.एड.) और कुछ स्थानों पर प्रचलित 4 वर्षीय एकीकृत बी.ए.बी.एड.ध्बी.एससी.बी.एड. मॉडल से भिन्न है, क्योंकि यह एक समग्र, अंतर्विषयक और व्यावसायिक तैयारी प्रदान करने पर केंद्रित है।

यह शोध पत्र राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के संदर्भ में चार वर्षीय एकीकृत बी.एड. पाठ्यक्रम की प्रभाविता का विश्लेषण करने का प्रयास करता है। इसका उद्देश्य यह समझना है कि यह नया मॉडल शिक्षकों को 21वीं सदी की चुनौतियों का सामना करने और एक गतिशील एवं समावेशी शिक्षण वातावरण बनाने के लिए कैसे बेहतर ढंग से तैयार कर सकता है।

## 2. साहित्य समीक्षा

**के. सिन्हा (2020)** ने कक्षागत शिक्षण के अन्तर्गत प्रभावकारिता पर शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम के प्रभाव का अध्ययन किया। इन्होंने 72 प्रशिक्षित एवं 72 अप्रशिक्षित शिक्षकों को अपने न्यादर्ष में षामिल किया। विश्लेषणोपरान्त पाया कि प्रशिक्षित शिक्षक, अप्रशिक्षित शिक्षकों की अपेक्षा विषयगतज्ञान, आत्मविश्वास, वाणी उच्चारण एवं चेहरे कि भावभंगिमा में बेहतर पाये गये। वास्तविक कक्षागत शिक्षण में भी प्रशिक्षित शिक्षक, अप्रशिक्षित शिक्षकों की तुलना में बेहतर थे।

**इद्रीसी (2020)** ने ''षिक्षकों की षिक्षण क्षमता का निवास, लैंगिक आधार, अनुभव तथा षिक्षा के स्तर के सम्बनध में अध्ययन'' किया। वर्णनात्मक शोध विधि का प्रयोग करते हुए यादृच्छिक न्यादषर्न विधि द्वारा विभिन्न प्रकार के 13 विद्यालयों से 200 षिक्षकों का चयन कर आँकड़ें प्राप्त किया और पाया कि ग्रामीण एवं षहरी षिक्षकों की षिक्षण क्षमता में अतंर साथर्क था। ग्रामीण षिक्षक षहरी षिक्षकों से षिक्षण क्षमता में बेहतर थे; महिला षिक्षक, पुरूष षिक्षकों से षिक्षण क्षमता में बेहतर थी तथा षैक्षिक योग्यता के आधार पर षिक्षकों की षिक्षण क्षमता में अतंर साथर्क नहीं था।

**प्रकाशन (2020)** ने ''ए स्टडी ऑफ टीचर इफैक्टिवनैस एज ए फंक्सन ऑफ स्कूल ऑगर्न इजेशनल क्लाइमेट एण्ड टीचिंग कॉम्पेटैन्सी'' पर शाधे अध्ययन किया। शोध का मुख्य उद्देश्य विद्यालयों के सगंठनात्मक वातावरण का शिक्षकों की प्रभावशीलता व शिक्षण योग्यता पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना था। इस अध्ययन हेतु रायपरु व बिलासपुर जिले के 92 प्रधानाचार्यो एवं 800 शिक्षकों का चयन किया गया। सांख्यिकीय विधियों में मध्यमान, मानक विचलन, प्रसरण विश्लेषण एवं टी–मान का उपयोग कर प्रदत्तों का विश्लेषण किया गया। प्रदत्तों के विश्लेषण के बाद निष्कर्ष स्वरूप पाया गया कि खुले वातावरण में शिक्षकों की शिक्षण योग्यता व शिक्षक प्रभावशीलता अन्य वातावरण की अपेक्षा उच्च स्तर की है। शहरी क्षेत्रों के शिक्षक औद्योगिक, अर्द्ध शहरी व ग्रामीण क्षेत्रों के शिक्षकों की अपेक्षा अधिक प्रभावशाली है। विभिन्न प्रकार के संगठनात्मक वातावरण का शिक्षक प्रभावशीलता व शिक्षण योग्यता के साथ सार्थक सकारात्मक सहसम्बन्ध होता है। विद्यालय प्रबन्धन के प्रकार और लैंगिक आधार शिक्षक प्रभावशीलता को सार्थक रूप से प्रभावित कर रहे थे।

## 3. अध्ययन का उद्देश्य

अध्ययन का उद्देश्य चार वर्षीय एकीकृत बी.एड. पाठ्यक्रम की प्रस्तावित विशेषताओं का गहन विश्लेषण करना, उसकी संभावित प्रभाविकता का मूल्यांकन करना और उसके कार्यान्वयन से जुड़ी चुनौतियों एवं अवसरों की पहचान करना है।

## 4. शोध विधि

यह शोध पत्र एक गुणात्मक और विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण अपनाता है। यह मुख्य रूप से राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के दस्तावेज, राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद के संबंधित दिशानिर्देशों, और शिक्षक शिक्षा पर उपलब्ध अकादमिक साहित्य, रिपोर्टों तथा नीतिगत विश्लेषणों पर आधारित है।यह अवधारणात्मक ढाँचे का उपयोग करते हुए, नीतिगत प्रावधानों और शैक्षिक सिद्धांतों के बीच के संबंधों की जाँच करता है।

## 5. चार वर्षीय एकीकृत बी.एड. पाठ्यक्रम की प्रभाविकता का विश्लेषण

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 द्वारा प्रस्तावित चार वर्षीय एकीकृत बी.एड. पाठ्यक्रम को कई मायनों में प्रभावी माना जा सकता है:

**5.1. एकीकृत और बहु–विषयक दृष्टिकोण:**

यह पाठ्यक्रम स्नातक की डिग्री के साथ शिक्षाशास्त्र को शुरू से ही एकीकृत करता है। इसका अर्थ है कि छात्र पहले वर्ष से ही अपने चुने हुए विषय (जैसे विज्ञान, कला, वाणिज्य) के साथ–साथ शिक्षाशास्त्र, बाल मनोविज्ञान, शैक्षिक प्रौद्योगिकी और शिक्षण विधियों का अध्ययन करते हैं।

लाभ: यह विषय–वस्तु ज्ञान और शिक्षाशास्त्रीय ज्ञान के बीच के पारंपरिक अलगाव को समाप्त करता है। शिक्षक केवल अपने विषय के विशेषज्ञ नहीं होते, बल्कि वे यह भी जानते हैं कि उस विषय को प्रभावी ढंग से कैसे पढ़ाया जाए, छात्रों के सीखने की शैलियों को कैसे समझा जाए, और एक समावेशी कक्षा का वातावरण कैसे बनाया जाए। यह एक समग्र शिक्षक तैयार करता है।

**5.2. प्रारंभिक व्यावसायिक समाजीकरण:**

छात्र उच्च माध्यमिक शिक्षा पूरी करने के तुरंत बाद ही शिक्षण के पेशे में प्रवेश करते हैं।

लाभ: इससे छात्रों में शुरुआती चरण से ही एक पेशेवर पहचान विकसित होती है। वे शिक्षण को एक गंभीर और आकर्षक करियर विकल्प के रूप में देखते हैं, न कि स्नातक के बाद एक माध्यमिक विकल्प के रूप में। यह पेशेवर मूल्यों, नैतिकता और प्रतिबद्धता को बचपन से ही विकसित करने में मदद करता है।

**5.3. प्रतिभाशाली युवाओं को आकर्षित करना:**

एक एकीकृत चार वर्षीय डिग्री के रूप में, यह पाठ्यक्रम उन प्रतिभाशाली छात्रों को आकर्षित कर सकता है जो शुरू से ही शिक्षण में अपना करियर बनाना चाहते हैं।

लाभ: यह शिक्षण को एक प्रतिष्ठित और पसंदीदा करियर विकल्प के रूप में स्थापित करेगा, जिससे उच्च–गुणवत्ता वाले छात्र प्रवेश लेंगे। इससे शिक्षा प्रणाली में प्रतिभाशाली और भावुक शिक्षकों की आमद बढ़ेगी, जो अंततः छात्रों के सीखने के परिणामों को बेहतर बनाएगा।

**5.4. गहरा व्यवहारिक अनुभव और इंटर्नशिप:**

चार साल की अवधि शिक्षकों को कक्षा के अनुभव, अवलोकन, सूक्ष्म शिक्षण और पूर्णकालिक इंटर्नशिप के लिए पर्याप्त अवसर प्रदान करती है।

लाभः यह सैद्धांतिक ज्ञान को व्यवहारिक कौशल के साथ जोड़ता है, जिससे भावी शिक्षक वास्तविक कक्षा स्थितियों के लिए बेहतर ढंग से तैयार होते हैं। वे विभिन्न शिक्षण संदर्भों और छात्र आवश्यकताओं को समझने में सक्षम होते हैं।

**5.5. 21वीं सदी के कौशल के लिए तैयारी:**

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 द्वारा परिकल्पित यह पाठ्यक्रम शिक्षकों को आलोचनात्मक सोच, रचनात्मकता, समस्या–समाधान, सहयोग, डिजिटल साक्षरता और संचार जैसे 21वीं सदी के प्रमुख कौशल से युक्त करेगा।

लाभः ये शिक्षक स्वयं इन कौशलों से लैस होने के कारण अपने छात्रों में भी इन्हें विकसित करने में सक्षम होंगे, जिससे वे भविष्य की चुनौतियों के लिए बेहतर ढंग से तैयार होंगे।

**5.6. शिक्षण के विभिन्न चरणों के लिए विशेषज्ञता:**

यह पाठ्यक्रम शिक्षकों को मूलभूत चरण, प्रारंभिक चरण, मध्य चरण और माध्यमिक चरण के लिए विशेषज्ञता प्रदान कर सकता है।

लाभः यह सुनिश्चित करेगा कि शिक्षक अपनी विशिष्ट आयु वर्ग के छात्रों की विकासात्मक आवश्यकताओं और सीखने की शैलियों को गहराई से समझें और उनके अनुरूप शिक्षण रणनीतियाँ अपनाएँ।

**5.7. अनुसंधान और नवाचार को बढ़ावा:**

चार वर्षीय कार्यक्रम में अनुसंधान विधियों और शैक्षिक नवाचारों को शामिल करने से शिक्षकों में अकादमिक जिज्ञासा और समस्या–समाधान की प्रवृत्ति विकसित होगी।

लाभः यह उन्हें अपनी शिक्षण प्रथाओं पर चिंतन करने, नए तरीकों का प्रयोग करने और शिक्षा के क्षेत्र में नए ज्ञान का योगदान करने के लिए प्रोत्साहित करेगा।

## 6. चुनौतियाँ और कार्यान्वयन संबंधी चिंताएँ

हालांकि चार वर्षीय एकीकृत बी.एड. पाठ्यक्रम अत्यधिक प्रभावी होने की क्षमता रखता है, इसके सफल कार्यान्वयन में कई चुनौतियाँ हैं:

### 6.1. बुनियादी ढाँचा और संसाधनः

एक एकीकृत और बहु–विषयक कार्यक्रम के लिए व्यापक बुनियादी ढाँचे की आवश्यकता होगी, जिसमें अच्छी तरह से सुसज्जित प्रयोगशालाएँ, पुस्तकालय, डिजिटल संसाधन और संलग्न अभ्यास विद्यालय शामिल हैं। कई मौजूदा शिक्षक शिक्षा संस्थान इन आवश्यकताओं को पूरा करने में सक्षम नहीं होंगे।

### 6.2. योग्य संकाय की उपलब्धताः

इस कार्यक्रम के लिए ऐसे संकाय सदस्यों की आवश्यकता होगी जो न केवल अपने विषय में विशेषज्ञ हों, बल्कि शिक्षाशास्त्र और अंतर्विषयक शिक्षण में भी निपुण हों। वर्तमान में, ऐसे संकाय का घोर अभाव है। संकाय विकास कार्यक्रम और पुनः प्रशिक्षण आवश्यक होगा।

### 6.3. पाठ्यक्रम का विकास और एकीकरणः

एक प्रभावी एकीकृत पाठ्यक्रम का निर्माण एक जटिल कार्य होगा, जिसमें विभिन्न विषयों और शिक्षाशास्त्र के बीच सामंजस्य स्थापित करना होगा। यह सुनिश्चित करना होगा कि दोनों क्षेत्रों को पर्याप्त गहराई और गुंजाइश मिले।

### 6.4. नियामक ढाँचा और गुणवत्ता नियंत्रणः

राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद को एक सुदृढ़ नियामक ढाँचा विकसित करना होगा ताकि कार्यक्रम की गुणवत्ता, मानकीकरण और मूल्यांकन सुनिश्चित किया जा सके। निम्न–गुणवत्ता वाले 'स्टैंड–अलोन' टीईआई को उच्च–गुणवत्ता वाले बहु–विषयक संस्थानों में बदलना एक बड़ी चुनौती होगी।

### 6.5. छात्र स्वीकृति और माँगः

नए पाठ्यक्रम को छात्रों और अभिभावकों द्वारा स्वीकार किया जाना महत्वपूर्ण है। समय और लागत बचत के बावजूद, पारंपरिक स्नातक डिग्री की तुलना में इसकी धारणा और मूल्य को बढ़ावा देना होगा।

## 7. सुझाव

उपरोक्त चुनौतियों का समाधान करने और चार वर्षीय एकीकृत बी.एड. पाठ्यक्रम की प्रभाविता को अधिकतम करने के लिए निम्नलिखित सुझाव दिए जाते हैं:

**निवेश और अनुदान:**

सरकार को नए संस्थानों की स्थापना और मौजूदा संस्थानों के उन्नयन के लिए पर्याप्त वित्तीय निवेश और अनुदान प्रदान करना चाहिए।

**संकाय विकास कार्यक्रम:**

संकाय सदस्यों के लिए व्यापक और सतत व्यावसायिक विकास कार्यक्रम आयोजित किए जाने चाहिए, ताकि वे बहु–विषयक दृष्टिकोण और नवीनतम शिक्षाशास्त्रीय प्रथाओं को अपना सकें।

**सहयोगी पाठ्यक्रम विकास:**

विश्वविद्यालयों और शिक्षाविदों के बीच सहयोग से लचीले लेकिन सुसंगत पाठ्यक्रम फ्रेमवर्क विकसित किए जाने चाहिए।

**कठोर प्रत्यायन और मूल्यांकन:**

एक मजबूत प्रत्यायन प्रणाली लागू की जानी चाहिए, जो संस्थानों द्वारा गुणवत्तापूर्ण शिक्षा मानकों का पालन सुनिश्चित करे। नियमित मूल्यांकन और जवाबदेही तंत्र आवश्यक हैं।

**जागरूकता और प्रोत्साहन:**

शिक्षण पेशे को आकर्षक बनाने और प्रतिभाशाली छात्रों को इस कार्यक्रम में प्रवेश लेने के लिए प्रोत्साहित करने हेतु छात्रवृत्तियाँ, कैरियर परामर्श और सार्वजनिक जागरूकता अभियान चलाए जाने चाहिए।

**डिजिटल साक्षरता और प्रौद्योगिकी का उपयोग:**

शिक्षकों को डिजिटल उपकरणों और शिक्षण–अधिगम की प्रक्रिया में प्रौद्योगिकी के प्रभावी उपयोग में प्रशिक्षित किया जाना चाहिए।

## 8. निष्कर्ष

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 द्वारा प्रस्तावित चार वर्षीय एकीकृत बी.एड. पाठ्यक्रम भारतीय शिक्षा प्रणाली में शिक्षक शिक्षा के लिए एक क्रांतिकारी कदम है। यह खंडित अतीत से हटकर एक समग्र, बहु–विषयक और व्यावसायिक दृष्टिकोण अपनाता है, जिसका उद्देश्य 21वीं सदी के लिए उच्च–गुणवत्ता वाले, चिंतनशील और प्रतिबद्ध शिक्षकों का एक नया कैडर तैयार करना है। यह पाठ्यक्रम न केवल विषय–वस्तु ज्ञान और शिक्षाशास्त्र को सफलतापूर्वक एकीकृत करता है, बल्कि यह छात्रों को शुरुआती चरण से ही एक पेशेवर पहचान विकसित करने और गहन व्यवहारिक अनुभव प्राप्त करने का अवसर भी प्रदान करता है।

इस पाठ्यक्रम की प्रभाविता इसकी संकल्पना में निहित है, लेकिन इसका वास्तविक प्रभाव इसके कार्यान्वयन की गुणवत्ता पर निर्भर करेगा। बुनियादी ढाँचागत चुनौतियों, योग्य संकाय की कमी, और एक प्रभावी नियामक तथा पाठ्यक्रम ढाँचे की स्थापना जैसे मुद्दों को सक्रिय रूप से संबोधित करना होगा। यदि ये चुनौतियाँ सफलतापूर्वक पार हो जाती हैं, तो चार वर्षीय एकीकृत बी.एड. पाठ्यक्रम निस्संदेह भारत में शिक्षक शिक्षा के परिदृश्य को रूपांतरित करेगा, शिक्षण पेशे की प्रतिष्ठा को ऊँचा उठाएगा, और अंततः देश भर के लाखों छात्रों के लिए सीखने के परिणामों को बेहतर बनाएगा। यह एक ऐसा निवेश है जो भारत के भविष्य की नींव को मजबूत करेगा।

## *संदर्भ सूची*


- *भारत सरकार (2020), राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020), शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार।*
- *राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद (NCTE) (2021), शिक्षक शिक्षा के लिए पाठ्यक्रम की रूपरेखा।*
- *टी.एच.के.एम.सी.एच.एल, एम. और एम.आर. (2021), राष्ट्रीय शिक्षा नीति के तहत भारत में समावेशी शिक्षक शिक्षा का अन्वेषण।*
- *कुमार, कृष्ण (2015), राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (2015), राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद ।*
- *यूजीसी (2020), भारतीय उच्च शिक्षा पर वार्षिक रिपोर्ट।*